सी-डैक
CDAC

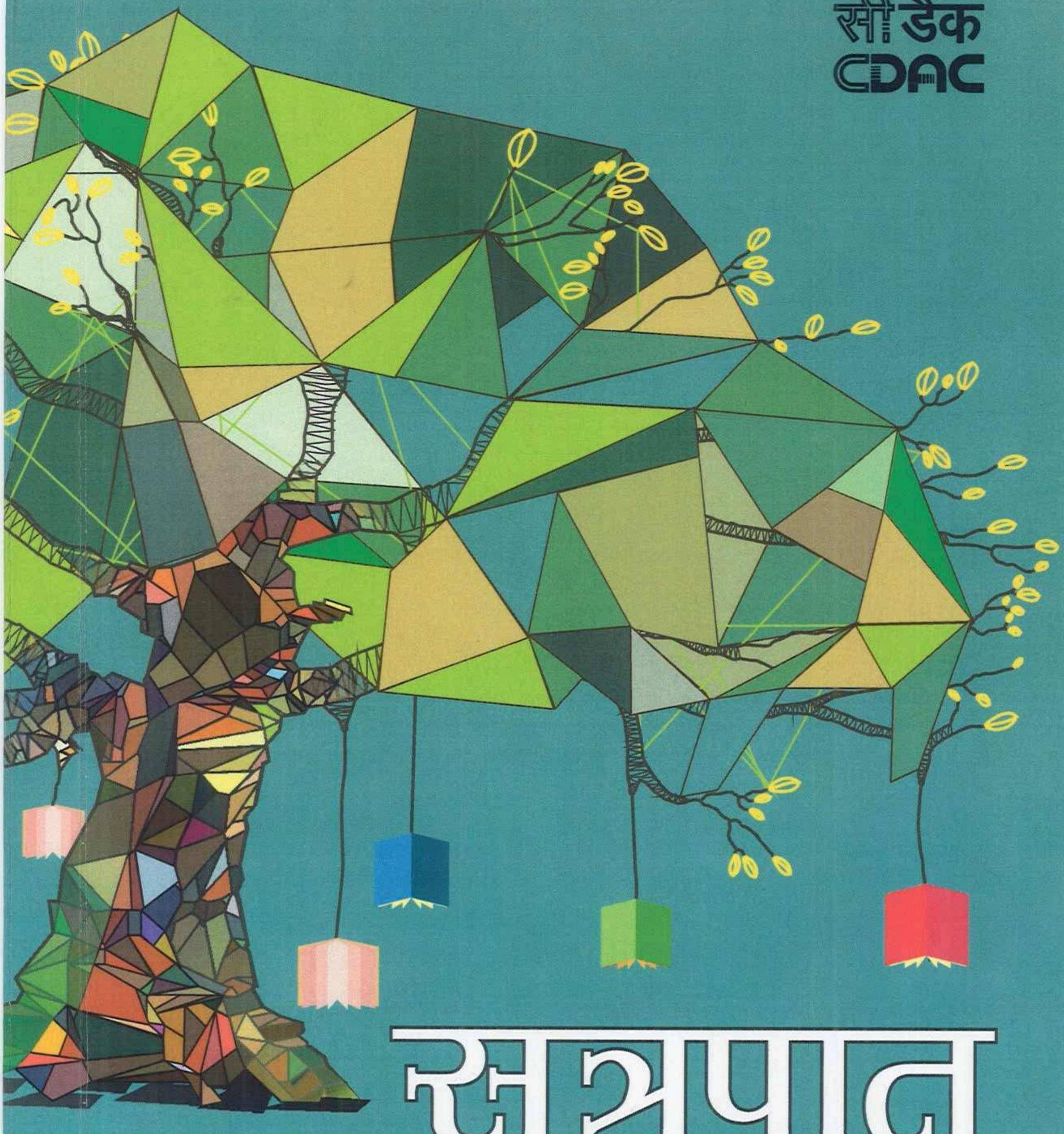

सूत्रपात

चतुर्थ गृह पत्रिका

प्रगत संगणन विकास केन्द्र,मोहाली

सूत्रपात

(वार्षिक गृह पत्रिका- चतुर्थ अंक)

इस अंक में

कार्यकारी निदेशक की कलम से

श्री डी के जैन

सुनीत मदान, अध्यक्ष

(राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

सम्पादकीय

सुषमा कौशल, हिन्दी अधिकारी

सम्पादक मण्डल

राजकुमार, शैलेश सिंह, शशि गोस्वामी, अनु आहुजा

सहयोग

प्रीतिका खेरा, प्रातिभा पाल

निःशुल्क वितरण के लिए

नोटः- प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक एवं सूत्रपात संपादक मंडल की पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। सूत्रपात में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के अपने है सम्पादक मंडल का सबसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रम

अंक (क)

संदेश निदेशक की कलम से

संपादकीय

अंक (ख)

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को श्रद्धांजलि	5
धारणीय आरोग्य संवेदक	6
मोबाइल फोन्स का हमारे जीवन पर प्रभाव	7
मानवीय जीवन का मूल उद्देश्य	9
गीता का महत्व	10
सन्तों की महिमा और दर्शनों का महत्त्व	12
तीन दिवसीय आवासीय हिन्दी कार्यशाला का मधुर अनुभव	14
गुड गवर्नेंस दिवस	17
योगा की उत्पत्ति	18
डिजिटल इंडिया सप्ताह	19
इन्सान की सोच	20
बदलते अहसास	21
मनोहारी यात्रा	23
इन्सानियत	25
नारी सशक्तिकरण	26
आओ मिलकर प्रदूषण घटाएं	28
मन	29
कविता	30
बेटी की पुकार	31
अच्छे वचन	32
कविता	33
हिन्दी के बारे में महापुरुषों के कथन	34
अमूल्य बातें	35
सुविचार सागर	37

निदेशक की कलम से

हमारे संस्थान की वार्षिक गृह पत्रिका 'सूत्रपात' के वर्तमान संस्करण को प्रस्तुत करने में मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार व प्रसार में इस संस्थान के अधिकारियों और कर्मचारियों का यह एक सामूहिक प्रयास है।

लेखकों और लेखिकाओं ने अपनी अभिव्यक्तियों और विचारों को लेख, कहानियों और कविताओं के माध्यम से अति सहजता से प्रस्तुत किया है। मुझे विश्वास है। कि हमारा यह प्रयास, पाठकों को हिन्दी भाषा में लिखने के लिए प्रेरणास्त्रोत बनेगा।

मैं, इस पत्रिका के लेखन, संपादन और प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

डी.के. जैन
निदेशक, सी–डैक, मोहाली

सम्पादकीय

भारत में कई प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं। भाषा द्वारा ही हम एक दूसरे के विचारा को जान सकते हैं। इनमें से हिन्दी ही एक ऐसी मातृभाषा है, जोकि हमें भारतीय होने का एहसास दिलाती है।

आज हिंदी केवल हमारे देश में ही नही जोर पकड रही, बल्कि विदेशी लोग भी हमारे देश की संस्कृति को जानने के लिए हिंदी भाषा सिख रहे हैं। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जोकि हर जगह बोली जा सकती है।

इस वर्ष 2015 में भी सी–डैक मोहाली अपनी वार्षिक पत्रिका चतुर्थ सूत्रपात निकाल रही है।मैं उन सबकी अभारी हुँ, जिन्होंने इस पत्रिका में अपना योगदान दिया।

धन्यवाद सहित,

सुषमा कौशल
हिन्दी अधिकारी

सूत्रपात

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम को श्रद्धांजलि

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम भारतीय गणतंत्र के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति थे । उन्हें मिसाइल मैन के नाम से भी जाना जाता था । अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनके अथक प्रयासों के साथ, भारत भी अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष क्लब का सदस्य बन गया। उन्होंने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) जैसे उच्च प्रौद्योगिकी संगठनों के लिए काम किया । वह भारत सरकार के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार भी रहे।

उन्होंने हमेशा ऊँची उड़ाने भरी - चाहे वह परमाणु परीक्षण हो, स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपास्त्र बनाना हो, छात्रों को प्रेरित करना हो। वह चाहते थे कि "भारत को एक मूल्य प्रधान राष्ट्र के साथ, एक विकसित राष्ट्र, एक समृद्ध राष्ट्र और एक स्वस्थ राष्ट्र के रूप में तब्दील होना होगा" ।

उनकी महानता का कोई मेल नहीं । वह सच मायने में जनता के राष्ट्रपति थे। छात्रों के बीच बैठकर ज्ञान -विज्ञान की बातें करना उन्हें बेहद पसंद था। २०१० में संयुक्त राष्ट्र ने डॉक्टर कलाम के जन्मदिन को 'विश्व छात्रों दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की ।

उन्होंने एक शांतिपूर्ण विश्व के लिए, मानवता के लिए, इस देश के लिए कई सपने देखे थे । वह कहते थे कि "सपना वो नहीं है जो आप नींद में देखें, सपने वो है जो आपको नींद ही नहीं आने दे" । विश्व के लिए देखे सपनों के संदर्भ में उनका आखरी व्याख्यान था ' रहने योग्य ग्रह', जिसके दौरान उन्हें जोरदार दिल का दौरा पड़ा और अस्पताल पहुँचने तक उनका निधन हो गया।

उन्होंने कई प्रेरक और प्रेरणादायक पुस्तकें लिखीं, जैसे कि 'इंडिया- माय-ड्रीम', 'इण्डिया 2020 ए विज़न फ़ॉर द न्यू मिलेनियम', 'विंग्स ऑफ फायर, एन आटोबायोग्राफी ऑफ एपीजे अब्दुल कलाम' तथा 'इग्नाटिड माइंड्स- अनलीशिंग द पॉवर विदिन इंडिया'।

वह कई महत्वपूर्ण पुरुस्कारों से सम्मानित किये गए, जिनमें पद्म भूषण, पद्म विभूषण, भारत रत्न, और वॉन ब्राउन अवार्ड भी शामिल हैं।

भारत और भारतवासियों के स्वर्ण भविष्य के लिये डॉ. कलाम का योगदान अद्वितीय रहेगा। वह हमेशा इस देश के लोगों के दिलों में रहेंगे। डॉ. कलाम, आपको हमारा सलाम।

सुनीत मदान

प्रधान तकनिकी अधिकारी

धारणीय आरोग्य संवेदक
(वीयरेवल हेल्थकेयर सेंसर)

आज मानव जीवन अत्याधिक चुनौतीपूर्ण हो चुका है। दैनिक तनावपूर्ण जीवनशैली के कारण हमारा स्वास्थ्य दिन–प्रतिदिन खराब होता जा रहा है। अब यह आवश्यक हो गया है कि हम अपने स्वास्थ्य के प्रति अति सजग और जागरुक रहें और नियमित रूप से अपने स्वास्थ्य की जाँच कराते रहें।

बदलती आरोग्य चुनौतियों के साथ–साथ स्वास्थ्य संबंधित जाँच के उपकरणों में बहुत बदलाव आ रहा है और ऐसे आरोग्य संवेदकों (हेल्थकेयर सेंसर्स) का विकास हो रहा है जो विभिन्न स्वास्थ्य आयामों (हेल्थ पैरामीटर्स) की लगातार निगरानी करने में सक्षम होते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धित कुछ आयाम जैसे रक्तचाप (ब्लडप्रेशर), रक्त शर्करा (ब्लड ग्लूकोज), नाड़ी स्पन्दन (पल्स) और रक्त में संतृप्त आक्सीजन की मात्रा (एस.पी.ओ.टू.) इत्यादि की लगातार निगरानी अत्यन्त उपयोगी साबित होती ह। यदि इनमें से एक या एक से अधिक आयाम अपनी निर्धारित स्वीकार्य सीमा से बाहर हैं तो तत्काल चिकित्सीय परीक्षण आवश्यक हो जाता है।

सी–डैक, मोहाली ऐसे आरोग्य संवेदक उपकरणों का विकास कर रहा है जो अत्याधुनिक तकनीक पर आधारित हैं और इन्हें सीमित ऊर्जा वालो बटन–बैटरी द्वारा संचालित किया जा सकता है।

सी–डैक, मोहाली वायरलेस ई.सी.जी., वायरलेस स्टेथोस्कोप और पल्स–आक्सीमीटर जैसे स्वास्थ्य संवेदक उपकरणों का विकास कर रहा है। इन सभी उपकरणों को इस तरह से तैयार किया जा रहा है कि इन्हें शरीर पर धारण किया जा सके। इनका आकार और वजन बहुत कम रखा गया है। तारों के जाल से छुटकारा पाने के लिए इन सभी उपकरणों में वेतार (वायरलेस) तकनीक का प्रयोग किया गया है। इन उपकरणों से एकत्रित स्वास्थ्य आंकड़ों का वायरलेस–गेटवे की मदद से रिमोट–सर्वर तक पहुँचाया जाता है जहाँ विभिन्न अनुप्रयोग प्रक्रियाओं (ऐप्लीकेशन–साफ्टवेयर) द्वारा इनका विश्लेषण किया जाता है।

इन सभी आरोग्य संवेदकों के प्रयोगशाला प्रारूपों का विकास कर लिया गया है और इनका सघन परीक्षण चल रहा है। ये सभी उपकरण शीघ्र ही उपयोग के लिए उपलब्ध होंगे।

शैलेश सिंह
अभियन्ता

सूत्रपात

मोबाइल फोन्स का हमारे जीवन पर प्रभाव

मोबाइल फोन इस शताब्दी का बेमिसाल चमत्कार है। हम कहीं भी चले जाएं यह छोटा सा उपकरण हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन कर सदा हमारे साथ रहता है। इसने हमारे जीवन को नया रूप दे दिया है। इस समय भारत की लगभग 121 करोड़ जनसंख्या में से 90 करोड़ से अधिक के पास मोबाइल फोन हैं। एक छोटे से छोटे इंसान से लेकर बड़े से बड़े इंसान तक सभी मोबाइल से जुड़े हैं। मोबाइल फोन से हमें हर पल की खबर मिलती रहती है। देश में हो या विदेश में हम इनकी सहायता स अपने परिजनों का हाल-चाल, बड़ी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। आज मोबाइल अनेक मौके पर हमारे लिए बरदान साबित हो रहा है। यदि कोई व्यक्ति घर से बाहर किसी दुर्घटना का शिकार हो जाए तो वह मोबाइल द्वारा अपने परिजनों को सूचित कर सकता है। आज एक रिक्शा वाला, कुली, सफाई कर्मचारी इत्यादि के पास भी मोबाईल फोन है, जिस की सहायता से उन्हें अपने कार्य करने में आसानी होती है।

मोबाइल फोन का प्रभाव पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं पर अधिक हो रहा है, आज कल तो छात्रों के पास मोबाइल फोन होना एक आम सी बात है। वे स्कूल, कालेज, टयूशन सैंटर व अन्य स्थानों पर मोबाइल फोन साथ लेकर जाते हैं। वे आपस में बातचीत बल्कि एस.एम.एस. (शार्ट मैसेज सर्विस) और एम.एस.एस. (मल्टीमिडिया मैसेजिंग सर्विस) करने के लिए इनका उपयोग करते हैं। इस सब का छात्रों की पढ़ाई पर सबसे ज्यादा प्रभाव पडता है, कुछ छात्र तो नकल के लिए भी इस का इस्तेमाल करते हैं। एस.एम.एस. (शार्ट मैसेज सर्विस) की भाषा का वह परीक्षा में इस्तेमाल करते हैं जो उचित नहीं है। कुछ छात्र तो इस का उपयोग अपनी जरूरत के हिसाब से करते हैं, लेकिन कुछ छात्र इस का उपयोग करके लड़कियों को परशान करते है, इस कारण कई बार लड़कियों को अपने मोबाइल नंबर बार-बार बदलने पड़ते हैं। बच्चों को माता-पिता तो उनकी सुरक्षा के लिए मोबाईल फोन लेकर देते हैं कि वो उस का सही ढंग से उपयोग कर सके, अगर वो किसी परेशानी में हो तो वो उनको फोन कर के बला सके या पढ़ाई संबंधी जानकारी अपने दोस्तों से सांझा कर सके। परन्तु कुछ बच्चे इसका गलत प्रयोग करते हैं। वे कई बार टयूशन के बहाने कही घूमने का प्रोग्राम बनाते रहते हैं। वो एक दूसरे को एस.एम. एस. के द्वारा सूचित कर देते हैं।

आज मोबाइल का प्रयोग हमारे जीवन में इतना बढ़ गया है कि इस के ज्यादा प्रयोग के कारण लड़कियों को ज्यादा परेशानियों का सामना करना पढ़ रहा है। लड़की से बातों के चक्कर में वो घर से बाहर जा कर उनसे बातें करती रहती है

वो ये भी नहीं देखती कि वो कहां या किस जगह पर खड़ी है, और इस कारण वो शर्मनाक हादसों का शिकार हो जाती हैं, जिस कारण उनके माता–पिता को कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

मोबाइल फोन्स का प्रयोग इतना बढ़ गया है कि लोग गाड़ी चलाते वक्त भी इस का प्रयोग करते रहते हैं जिस कारण कितनी दुर्घटनाएं आए दिन हाती रहती हैं।

मोबाइल फोन्स के द्वारा हम विभिन्न प्रकार की जानकारी घर पर बैठ कर ही प्राप्त कर सकते हैं, उसके लिए हमें कहीं भी बाहर जाने की जरूरत नहीं है। आज एक किसान भी मोबाइल के जरिए टोल फ्री नं. का प्रयोग करके खेती संबंधी विभिन्न प्रकार की जानकारी घर बैठ कर ही प्राप्त कर सकता है। मोबाइल पर इटंरनैट का प्रयोग होने से कम्पयूटर का प्रयोग भी बहुत कम हो गया है। आज मोबाइल फोन ने एक आम आदमी की दिशा को ही बदल के रख दिया है। आज एक कम पढ़ा लिखा इन्सान भी इस का प्रयोग आसानी से कर सकता है।

आज मार्किट में विभिन्न प्रकार के मोबाइल फोन्स उपलब्ध हैं, हर कोई चाहता है कि उसके पास मंहगे से मंहगा फोन हो जिस कारण मोबाईल की बिक्री में काफी इजाफा हो रहा है।

बच्चे भी मोबाइल पर गेम्स खेलना ज्यादा पसंद करते हैं, जिस कारण वो शारीरिक खेल खेलना पसंद नहीं करते इसी कारण बच्चे मोटापे का शिकार हो रहे हैं क्योंकि शारीरिक कसरत की तरफ वो बिल्कुल ध्यान नहीं देते, सारा दिन बैठने के कारण उनमें मोटापा हावी हो रहा है।

अगर हम मोबाइल फोन का प्रयोग सही ढंग से और अपनी जरूरत के हिसाब से करे तो ये हमारे लिए एक वरदान साबित हो सकता है, अगर गलत ढंग से करे तो श्राप। ये इन्सान के हाथ में है कि वो इस का प्रयोग किस ढंग से करना चाहता है।

बलबीर कौर
प्रोजेक्ट सर्विस सपोर्ट

मानवीय जीवन का मूल उद्देश्य

आधुनिक काल में मानव माया के जाल में फंस कर मानवीयता का मूल्य खत्म कर रहा है चाहे मानव कितनी भी आधुनिक तरक्की करे अगर उसे प्रभु परमात्मा की जानकारी नहीं हुई तो उसका जीवन व्यर्थ ही चला जाता है क्योंकि इन्सान की जूनी में आने का मूल उद्देश्य प्रभु परमात्मा की जानकारी लेना है ना कि दुनियावी चीज़ों को हासिल करना है क्योंकि जैसे एक कथा है कि एक बार एक महात्मा लाहौर के पास एक गांव में ठहरे हुए थे। वहां एक बड़े वैभवशाली व्यक्ति ने जाकर उनको कहा, 'मेरे पास बहुत संपत्ति है, मुझे उसका सदुपयोग करना है। आप कोई ऐसा मार्ग बताएं, और बताएं कि मैं इसका सही उपयोग कैसे कर सकूंगा'। महात्मा ने उसकी तरफ देखा और कहा कि मैं तो देखता हूं कि तुम तो बहुत द्ररिद्र हो, तुम्हारे पास संपत्ति कहां से आई? व्यक्ति ने कहा, ''शायद आप मेरे साथ परिचित नहीं हैं, आप मुझे जानते नहीं हैं। आज्ञा दें तो मैं बतलाऊं कि मेरे पास कितनी संपत्ति है। आप जो कहें वह मैं कर दिखाऊं''। महात्मा ने उसे एक छोटी सी कपड़ा सीने की सुई दी और कहा कि मरने के बाद यह मुझे वापस लौटा देना। वह आदमी हैरान हुआ और सोचने लगा। पर उसने सबके सामने महात्मा से कुछ नहीं कहा। वह लौटा, रात भर सोचता रहा। मित्रों से पूछा कि क्या कोई रास्ता हो सकता है कि सुई को मैं मृत्यु के पार ले जाऊं? लोगों ने कहा कि यह तो असंभव है। इस जगत की सारी संपत्ति मिलकर भी एक सुई को मृत्यु के पार नहीं ले जा सकती। और कैसे भी मुट्ठी बांधी जाए, मुट्ठी इस पार ही छूट जाएगी और कितने ही उपाय किए जाएं लेकिन मृत्यु के सामने सब कुछ व्यर्थ है। वह रात को चार बजे अंधेरे में लौटा। उसने महात्मा को सुई वापस कर दी और कहा, ''मुझे क्षमा करें। इसे वापस ले लें, मेरी संपत्ति इसे मृत्यु के उस तरफ ले जाने में समर्थ नहीं है। महात्मा ने कहा'' अगर एक सुई मृत्यु के उस तरफ नहीं जाती, ता फिर तुम्हारे पास ऐसा क्या है जो मृत्यु के उस पार जा सकेगा? और अगर ऐसा कुछ भी नहीं है तो अपने को दरिद्र ही जानना। संपन्न केवल वे ही हैं जिनके पास मृत्यु के पार ले जाने को कुछ हो। ऐसी संपत्ति न हा जो मृत्यु के पार न जा सके। यह ध्यान रखना बहुत जरूरी है कि हम बहुत दरिद्र हैं। जगत की संपत्ति को देखकर जो इस भ्रम में पड़ जाते हैं कि उनकी दरिद्रता मिट गई, वे बहुत बड़े भ्रम में जीते जाते हैं।

फिर प्रश्न यह आता है कि परमात्मा की जानकारी कैसे हो सकती है क्योंकि धर्म का प्रारंभ शास्त्रों को पढ़ने से नहीं होता, धर्म का प्रारंभ धर्म ग्रंथों के अध्ययन से नहीं होता, धर्म का वास्तविक प्रारंभ आंतरिक दरिद्रता के बोध से होता है। और जिस व्यक्ति को वह बोध न पकड़ता हो उसके पढ़े हुए शास्त्र किसी काम के नहीं होंगे। धर्म के संबंध में उसकी जानकारी व्यर्थ होगी। केवल वे ही लोग धर्म की बाबद वस्तुत: जिज्ञासु हो सकते हैं जिन्हें भीतर दरिद्रता का स्मरण हो जाए। तब धर्म उनके लिए मात्र एक जिज्ञासा नहीं होगी, बल्कि धर्म उनके लिए प्यास बन जाएगी। जिस व्यक्ति को प्यास लगी हो, उसके लिए पानी सार्थक हो जाता है और जिस व्यक्ति को प्यास न लगी हो उसे हम सरोवर के किनारे भी खड़ा कर दें, तो भी पानी उसे दिखाई नहीं पड़ता। पानी को देखने के लिए प्यास चाहिए और धर्म के अनुभव के लिए भी प्यास चाहिए। दुनिया में बहुत धर्मग्रंथ हैं, बहुत धर्म मंदिर हैं, बहुत धर्मउपदेशक हैं लेकिन धर्म की प्यास कम होती जा रही है। कारण एक ही है कि हमारी आंतरिक दरिद्रता का बोध कम हो रहा है। जब यह बोध हो जाएगा हम सच्चे अर्थों में संपन्न हो पाएंगे।

दलजीत सिंह जौली
प्रशासनिक अधिकारी

गीता का महत्व

'श्रीमद् भगवद्गीता' एक ऐसा ग्रंथ है जिसकी सम्पूर्ण विश्व में मान्यता है। भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं कुरूक्षेत्र के युद्ध मैदान में अर्जुन को निमित्त बनाकर मनुष्य मात्र को गीता के द्वारा परम सुख, परम शांति प्राप्त करने का मार्ग दिखाया था। इस ग्रंथ में जीवन की गहराइयों में छिपे हुए रत्नों को पाने की ऐसी कला है जिसे प्राप्त कर मनुष्य की हताशा–निराशा एवं दु:ख–चिंताएं मिट जाती हैं। गीता का बहुमूल्य ज्ञान मानव को मुसीबतों के सिर पर पैर रखकर अपने परम वैभव को, परम साक्षी स्वभाव को प्राप्त करने की ताकत रखता है। यह बीते हुए का शोक मिटा देता है और भविष्य के भय को मिटा देता है।

''गीता'' भगवान के अनुभव की पोथी है। वह भगवान का हृदय है। गीता के ज्ञान से विमुख होने के कारण ही आज का मनुष्य दु:खी एवं अशांत है। दु:ख एवं शोक से व्याकुल व्यक्ति गीता क दिव्य ज्ञान का अमृत पीकर शांतिमय, आनंदमय जीवन जीकर मुक्तात्मा, महानात्मा स्वभाव को जान लेता है, जो वह वास्तव में है ही, गीता केवल जता देती है।

आज के चिंताग्रस्त, अशांत मानव को गीता के ज्ञान की अत्यंत आवश्यकता है। भोग–विलास के आकर्षण व छल–कपट से प्रभावित होकर पतन की खाई में गिर रहे समाज को गीता ज्ञान सही दिशा दिखाता है। आज का मनुष्य हर समय नकारात्मक सोच के साथ जी रहा है और आज के इस वातावरण को देखते हुए इस ग्रंथ की उपयोगिता और भी बढ़ जाती है। अगर समाज में सकारात्मक सोच होगी तो समाज आगे बढ़ेगा, समाज आगे बढ़ेगा तो भाईचारा आगे बढ़ेगा, अगर भाईचारा आगे बढ़ेगा तो देश आगे बढ़ेगा। क्योंकि आज पूरे देश में एक भाईचारे की जरूरत है जो पिछले कुछ दशकों से गायब होता जा रहा है।

आज समाज में अनेकों बुराईयां व्याप्त हो चुकी हैं। लोग भय, भ्रष्टाचार से ग्रस्त हैं। लोगों का आपस से विश्वास उठ चुका है, इसी विश्वास और भाईचारे को दोबारा स्थापित करने के लिए आज इस ग्रंथ की महत्ता और ज्यादा बढ़ जाती है।

सूत्रपात

लोकमान्य तिलक एवं गांधीजी ने गीता से कर्मयोग को लिया, रामानुजाचार्य नें इसमें भक्तिरस को देखा तथा अन्य कई महापुरूषों ने इसके ज्ञान का प्रकाश फैलाया।

हमारे प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी इसी ग्रंथ से प्रेरित हैं और एक सकारात्मक सोच के धनी हैं तभी तो उन्होंने आम चुनावों में पूरे देश में एक अलग ही तरह की अलख जगाई और लागों के दिलों में अपनी जगह बनाकर प्रधानमन्त्री का पद हासिल किया। भारत में ही नहीं अपितु विश्व भर में आज उनकी छाप देखने को मिल रही है। उनकी वजह से आज हमारे देश का विश्व भर में गौरव बढ़ गया है। आज हम टैलीविजन और जितने भी मीडिया या प्रचार प्रसार के साधन हैं वहां हम देख रहे हैं कि किस तरह लोग मोदी जी को सुनने और देखने के लिए लालायित हो रहे हैं। वह जिस भी देश में जा रहे हैं वहां का वातावरण ही मोदीमय बन जाता है। अभी हाल ही में जब हमारे प्रधानमन्त्री जी भूटान, नेपाल, जापान, अमेरिका और आस्ट्रेलिया की विदेश यात्राओं पर गये तब भी उन्होंने उन राष्ट्राध्यक्षों को गीता का ग्रंथ ही भेंट किया जो कि एक बहुत ही सराहनीय एवं अनुकरणीय पहल है। और मैं समझता हूं कि इस भेंट के आगे कोई भी भेंट बड़ी नहीं हो सकती।

गीता किसी मत–मजहब को चलाने वाले के द्वारा नहीं कही गई है अपितु जहां से सारे मत–मजहब उपजते हैं और जिसमें लीन हो जाते हैं उस आदि सत्ता ने मानवमात्र के कल्याण के लिए गीता सुनाई है। गीता के किसी भी श्लोक में किसी मत मजहब की निंदा अथवा बुराई नहीं है। गीता के ज्ञानामृत से मनुष्य के जीवन में साहस, समता, सरलता, स्नेह, शांति आदि गुण सहज ही विकसित हो उठते हैं। अर्जुन को जितनी गीता की जरूरत उस वक्त थी, शायद उससे भी ज्यादा आज के मानव को उसकी जरूरत है।

हरि सम जग कछु वस्तु नहिं, प्रेम पंथ सम पंथ।
सद्गुरू सम सज्जन नहीं, गीता सम नहिं ग्रंथ।।

राज कुमार
सहायक

सन्तों की महिमा और दर्शनों का महत्त्व

साधु सन्तों का सम्पूर्ण जीवन परोपकारमय होता है। वे परमात्मा के सच्चे पुत्र होते हैं। उनके लिए सभी धर्म, जातियों, पंथ और सम्प्रदाय एक समान होते है। वे सभी इन्सानों में एक ही परमात्मा का देखते हैं और सभी के लिए एक समान उपदेश देते हैं। वे भ्रमों में उलझे हुए बाहर मुखी जीवों को सच्चाई और हकीकत का सन्देश देते हैं। वे जीवों का परमात्मा के सच्चे नाम के साथ जोड़कर अन्तर्मुख होने का भेद प्रदान करते हैं। सन्तों के अनुसार सच्चा नाम पढ़ने, लिखने या बोलने में नहीं आ सकता परमात्मा के नाम और नामी परमात्मा में कोई भेद नहीं होता।

सन्तों का ज्ञान पढ़ा पढ़ाया या सुना सुनाया नहीं होता वह उनके निज अनुभव का सार होता है। अनुभव से प्राप्त ज्ञान ही सच्चा ज्ञान होता है। उस अनुभव को प्राप्त करने के लिए हमें किसी पूर्ण सन्त से ज्ञान लेकर उनके आदेशानुसार अन्तर्मुख अभ्यास करना पड़ता है। असली सन्त आन्तरिक अभ्यास का भेद बता देते हैं जिसके द्वारा आत्मा शरीर के नौ द्वारों से सिमटकर दोनों आँखों के पीछे अपने केन्द्र पर आकर अनहद धुन को पकड़ लेती है।

सन्त–सतगुरु चाहे किसी भी कौम, मजहब या मुल्क में क्यों न हो उनकी दृष्टि केवल आत्मा और परमात्मा की ओर होती है। वह कोई नया मजहब या नये रस्मों रिवाज नहीं बनाने आते वे न किसी आत्मा अन्ध विश्वास को मानते हैं और न किसी को अन्ध विश्वासों में धकेलते हैं। वे तो जीते–जी मुक्ति प्राप्त करने का मार्ग दिखाते हैं, मरने के बाद की मुक्ति का भरोसा नहीं दिलाते। यहाँ तक कहा जाता कि सन्तों को देह के लिबास में परमात्मा छिपा हुआ होता है जो उनके द्वारा बोलता है। परमात्मा तो असीम और निराला है लेकिन उसे देहचारी जीवों पर प्रकट होने के लिए देहचरण करनी पड़ती है। बिना शरीर के वह जीवों के साथ किस प्रकार बातचीत कर सकता है। कबीर साहिब ने फरमाया है कि "ब्रह्म बोले काया के ओले। काय बिन ब्रह्म क्या बोले। कबीर साहब के समय का ही प्रसंग है कि उनकी शिष्य रानी इन्दुमती जब अभ्यास करके धुर–धाम पहुंची तो देखा कि कबीर साहिब सतपुरुष के स्थान पर बैठे हुए हैं। कहने लगी, महाराज! यदि आप मुझे पहले ही बता देते कि आप सतपुरुष हैं तो मैं वहीं आपको पहचान लेती। कबीर साहब कहने लगे कि तुझे उस समय विश्वास कैसे आता। सच्चा सन्त कभी भी करामातें कर मदारियों की तरह खेल नहीं दिखाता। वह सब शक्तियों का मालिक होते हुए भी उनको गुप्त रखता है।

सूत्रपात

सन्त जीव की आन्तरिक अवस्था को परख लेते हैं। वे उसकी आन्तरिक अवस्था को इस प्रकार देख लेते हैं जिस प्रकार हमें किसी शीशे की बोतल में रखी हुई वस्तु दिखाई देती है, पर वे परदाफोश होते हैं जीवों के दोषों को प्रकट नहीं करते। उनके पास कोई किसी भी भाव से जाए, भ्रमर होकर जाए या भिड़, फूल की भांति वे दोनों को खुशबू प्रदान करते हैं। कोई उनके दर से खाली नहीं आता।

भागवत में भगवान् कपिल अपनी माता देवहूति को सन्तों के निम्नलिखित लक्षण बताते हैं:

जो निर्धनता में दुःखी नहीं होते और सुख में खुशी से फूलते नहीं, जो धैर्य और दया के पु´ज होते हैं, जो सबके निःस्वार्थ मित्र होते हैं और किसी को शत्रु नहीं मानते, जो सदा एक–रस और निश्चल रहते हैं, जो मेरी सच्चाई को जानते हुए भक्तिपूर्वक मुझसे प्रेम करते हैं, जिन्होंने मेरे लिए सम्पूर्ण कर्मों के फलों का त्याग किया है तथा सब सांसारिक सम्बन्धियों से मुँह मोड़ लिया है, जो मुझ पर पूर्ण विश्वास करते हुए मेरा गुण–गान करते हैं और अपना चित्त मुझ में लगाए रखते हैं, ऐसे लोग सब बन्धनों से मुक्त हैं और संसार के भोगों की चेष्टा से बचे रहते हैं। ऐसे पुरुष संगति करने के योग्य हैं।[5]

भागवत में भगवान् कृष्ण उद्धव को समझाते हैं :

जो सब पर दया करता है किसी से वैर नहीं रखता, जो धैर्यवान और सच्चा है, मन से पवित्र है, सबके लिए सम–भाव रखता है और सबको सुख पहुँचाता है, जिसका मन इच्छाओं से मुक्त है, जिसकी इन्द्रियाँ वश में हैं, जो कोमल–हृदय है, श्रेष्ठ और शुद्ध आचरण वाला है, जो नम्रतापूर्ण और इच्छाओं से रहित है, जिसके स्वभाव में संयम है, जिसका मन शान्त और दृढ़ है, जिसने स्वयं को मेरे अर्पण कर दिया है तथा जो सदैव मेरे अलौकिक गुणों का चिन्तन करता है, जिसमें कोई त्रुटि नहों, जो गम्भीर है, सन्तोषी है, जिसने भूख और प्यास, हर्ष और शोक, जन्म और मरण पर विजय प्राप्त कर ली है, जो किसी से अपना मान करवाना स्वीकार नहीं करता, परन्तु स्वयं सबका आदर करता है, जो अपने उत्तरदायित्व को निभाता है, सबका मित्र है तथा दया और ज्ञान से परिपूर्ण है, ऐसा मनुष्य सन्त या साधु है।

मोहन लाल
वरिष्ठ वित्त अधिकारी

तीन दिवसीय आवासीय हिन्दी कार्यशाला का मधुर अनुभव

राजभाषा संस्थान, नई दिल्ली द्वारा जिम कोर्बेट पार्क जिला नैनीताल उत्तराखण्ड में आयोजित "आज के बदलते परिवेश में राजभाषा हिन्दी, तनाव प्रबंधन, संवाद कौशल, राजभाषा प्रबंधन, नीति कार्यान्वयन, कार्यशाला संचालन, सूचना प्रौद्योगिकी एवं कम्पयूटरीकरण" संबन्धी 77वीं संगोष्ठी एवं कार्यशाला 12 से 14 नवम्बर, 2014 हेतु मुझे कार्यालय द्वारा नामित किया गया था। इस तीन दिवसीय आवासीय कार्यशाला हेतु मुझे नामित करने के लिए मैं अपने केन्द्र सी–डैक मोहाली के निदेशक महोदय का दिल से धन्यवाद करता हूँ।

इस तीन दिवसीय आवासीय कार्यशाला में मैने भाग लिया और यह मेरे लिए एक बहुत ही उपयोगी कार्यशाला थी। इस कार्याशाला में हिन्दी के प्रयोग के बारे में विस्तार से बताया गया। इस कार्यशाला में यह भी बताया गया कि किस प्रकार हम हर दैनिक कार्य हिन्दी में कर सकते है जैसे कि खासकर स्थापना शाखा, प्रशासनिक विभाग, क्रय विभाग एवं वित विभाग। इसी कार्यशाला से सम्बन्धित कुछ मधुर पलों को मैं आप सभी के साथ सांझा करना चाहता हूं।

11 नबम्बर 2014 को दोपहर वाली शताब्दी रेल से मैंने यात्रा की शुरूआत की। दिल्ली तक रेल से सफर था और उसके आगे की यात्रा और रहने का सारा प्रबन्ध राजभाषा संस्थान नई दिल्ली द्वारा किया गया था। हम भारत के विभिन्न प्रान्तो और विभिन्न विभागों/मन्त्रालयों के लगभग 30 लोग बसन्त विहार में इकटठा हुए, जहां से रामनगर के लिए बस में जाना था। बसन्त बिहार, नई दिल्ली से हमने लगभग रात्रि के 12:00 बजे बस द्वारा रामनगर, जिला नैनीताल के लिए प्रस्थान किया। अगले दिन यानि 12.11.2014 सुबह लगभग 7:00 बजे हम होटल आमोद रिर्सोट, जिम कोर्बेट पार्क में पहुंचे। जैसे ही हमारी बस होटल में पहुंची तो लगभग सभी लोग सर्दी से कांप रहे थे क्योंकि दिल्ली से जब हम निकले तो मौसम बहुत सुहाना था, न ज्यादा गर्मी थी और न ही ज्यादा सर्दी। परन्तु जैसे ही रामनगर में हम बस से उतरे तो एकदम सर्द हवाएं चल रही थी और हर कोई ठण्ड से ठिठुर रहा था। होटल में पहुचते ही चायपान का प्रबन्ध किया गया था और सभी लोग एकदम गर्मागर्म चाय की तरफ भाग निकले।

होटल एकदम कोसी नदी के किनारे जिम कोबट पार्क मे स्थित है जिसका अपना ही एक अद्‌भुत नजारा है। होटल बहुत ही सुन्दर, खुला माहौल, साफ सुथरा, बहुत अच्छी फुलबारियां जिसमें रंग बिरंगे फूल खिले हुए थे। सुबह सुबह सूरज की पहली किरण में तो होटल का विहंगम दृश्य देखने लायक था और बस के रात भर के सफर की सारी थकावट होटल में पहुंचते ही दूर हो गई। कमरों में पहुचने के बाद नहा–धोकर नाश्ता करके हम लोग सम्मेलन कक्ष में पहुंचे। वहां पर बैठने का बहुत ही सुन्दर और सुनियोजित प्रबन्ध किया गया था।

सूत्रपात

विभिन्न विभागों/मन्त्रालयों जैसे लोकसभा सचिवालय नई दिल्ली, वाहन अनुसंधान तथा विकास स्थापन अहमद नगर, भारतीय निर्यात ऋण गारंटी निगम लि0 मुम्बई, महानिदेशालय, के.लो.नि.वि. नई दिल्ली, आयकर महानिदेशालय सतर्कता नई दिल्ली, राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र मानेसर, प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय पुणे, हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन लि0 मुम्बई, राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन केन्द्र नई दिल्ली, नौवाहन सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला अम्बरनाथ, एन.एच.पी.सी. पिथौरागढ, भारतीय रेल सिगनल इंजीनियरी और दूरसंचार संस्थान सिकन्दराबाद, भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण पटना, पावर ग्रिड कारपोरेशन आफ इंडिया लि0 गुड़गांव, केन्द्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान मुम्बई तथा केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान बहरामपुर इत्यादि से हम कुल 40 प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। सभी लोगों ने एक दूसरे से परिचय किया और एक दूसरे को नजदीक से जाना तथा एक दूसरे के कार्यालयों में हिन्दी में हो रहे कार्यों की जानकारी सांझा की।

कायशाला का शुभारम्भ बहुत ही खुशनुमा माहौल से शुरू हुआ। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिन्दी को सभी कार्यालयों में शत प्रतिशत लागू करने पर था। हिन्दी कैसे सरकारी कामकाज की भाषा बने इन बातों पर विशेष रूप से जोर दिया गया। भारत के सभी केन्द्र और राज्य सरकारों में हिन्दी कैसे मौलिक भाषा बने। कार्यशाला का थीम था ''आज के बदलते परिवेश में राजभाषा हिन्दी, तनाव प्रबन्धन एवं संवाद कौशल एवं राजभाषा प्रबंधन, नीति कार्यान्वयन, सूचनी प्रौद्योगिकी एवं कम्पयूटरीकरण'' उपरोक्त विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई और बहुत ही बारीकी से इन बातों को समझाया कि किस प्रकार हम जीवन में बढ़ते तनाव को दूर कर सकते हैं और किस प्रकार से राजभाषा हिन्दी को अपने कार्यालयों में बहुत ही आसानी से आगे बढ़ा सकते हैं और किस प्रकार से हम राजभाषा प्रबंधन एवं इसका नीति कार्यान्वयन कर सकते हैं।

तनाव क्या है? आज यह तनाव शब्द हर जगह व्यापत है। जिस किसी को भी पूछो, चाहे वह विद्यार्थी हो, कर्मचारी हो, गृहिणी हो, हर कोई कहता है कि मेरी जिन्दगी में तो बहुत तनाव है। आखिर यह तनाव है क्या? यह तनाव अपने विचारों/कार्यों तथा विद्यमान स्थितियों के बीच असामजस्य से मन व शरीर पर होने वाला प्रतिकूल प्रभाव तनाव कहलाता है। इसके मुख्य कारण हैं जैसे : अपनी इच्छाओं की पूर्ति न होना, अचानक नुकसान होना, समय पर काम न होना, किसी प्रियजन की मृत्यु, कोई बीमारी, योग्यता के अनुसार वस्तु न मिलना, धैर्य न होना, अपने बास/साथी/परिवारजनों के स्वभाव के साथ मेल न बैठना, पति–पत्नी के साथ सम्बन्धों में मधुरता की कमी, नींद न आना, भूख में कमी, ब्लड प्रैशर में बृद्धि, एकाग्रता में कमी, निराशा की भावना, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि।

ऐसा नहीं है कि इस तनाव का कोई निदान नहीं है। हर समस्या का कोई न कोई हल तो होता ही है। संसार में ऐसी कोई चीज ऐसी नहीं है जो असम्भव हो। आवश्यकता है तो सिर्फ अपने आप को पहचानने की। जिस दिन हम अपने आप को पहचान जाएंगे उसी दिन से हमारी आधी से अधिक समस्याओं का हल हो जाएगा और हमारी जिन्दगी से तनाव भी कम हो जाएगा। आज आवश्यकता है समस्या का साधन विकल्प खोजने की।

समस्या के बारें में अपने मित्र/जानकार व्यक्ति से बात करें। ध्यान करें, नियमित व्यायाम करें, योगाभ्यास करें। रूचिकर गतिविधियों में लिप्त रहें। संगीत सुनें। परनिदां चुगली से बचे। सोचें अन्तिम रूप में होगा क्या। संतुष्टि का भाव जागृत करें। सदैव प्रभु पर विश्वास रखें। हानि को सहने की क्षमता रखें। ऐसे अनेक उपाय हैं जिसके द्वारा हम इस तनाव को अपनी जिन्दगी से दूर रख सकते हैं।

राजभाषा हिन्दी को आधुनिक तकनीक से आगे बढ़ाना। राजभाषा प्रबंधन तथा नीति कार्यान्वयन के लिए सुनियोजित ढंग से काम करना। विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, अर्जित ज्ञान का समन्वय तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सही और ठीक रास्ते का चयन करना। वैकल्पिक कार्य प्रणालियों का सोच विचार, चालू निष्पादन का मूल्यांकन, सहकर्मिया का मार्गदर्शन करना इत्यादि ऐसे बहुत से उपाय बताए गए जिसके द्वारा हम राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दे सकते हैं। अपना दैनिक कार्य हम हिन्दी में कर सकते हैं।

वर्तमान परिस्थितियों पर अगर हम नजर डालें तो आज भारत में लगभग 99 प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। आज अगर हम व्यवसायिक दृष्टि से भी नजर डालें तो भारत में आज भी हिन्दी के समाचार पत्रों का दबदबा है। पत्रिकाओं के क्षेत्र में भी हिन्दी की पत्रिकाओं जैसे मेरी सहेली, प्रतियोगिता दर्पण, गृहलक्ष्मी रीर्डज डाइजेस्ट इत्यादि का बाजार में दबदबा है। भारतीय टैलिविजन पर भी आज ज्यादातर हिन्दी चैनलों की भरमार है और भारत में उत्साह वर्धक विजनेस कर रहे हैं।

भारत सरकार का भी कहना है कि केन्द्र सरकार के सभी मंत्रालयों/ विभागों/ उपकमों में जो ''ख'' क्षेत्र में आते हैं वहां कार्यालय का अर्थ है: स्थापना, प्रशासन, क्रय एवं वित्त विभाग का सारा काम हिन्दी में किया जाएगा।

जैसा कि हमारा सस्थान इस ''ख'' क्षेत्र में आता है इसलिए यह अनिवार्यता हम पर ज्यादा लागू होती है। वैसे तो हमारे कार्यालय में हिन्दी में उल्लेखनीय कार्य हो रहा है जिसकी मान्यता पिछले साल संसदीय उप समिति द्वारा किए गए निरीक्षण रिर्पोट में की गई है। इसी उल्लेखनीय कार्य के लिए हमारे कार्यालय को राजभाषा संस्थान द्वारा एक स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया है।

इस प्रकार से मानता हूं कि यह तीन दिवसीय कार्यशाला मेरे लिए बहुत ही उपयोगी साबित हुई और फिर से मैं अपन निदेशक महोदय का धन्यवाद एवं आभार प्रकट करता हूं।

राज कुमार
सहायक

गुड गवर्नेंस दिवस

25 दिसम्बर, 2014 को इलेक्ट्रानिक और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग (डीईआईटीवाई) ने मानिकशा केन्द्र, नई दिल्ली में 'गुड गवर्नेंस' दिवस का आयोजन किया।

इस आयोजन के लिए पूर्व प्रधान मन्त्री श्री अटल विहारी वाजपेयी के जन्म दिन अर्थात 25 दिसम्बर को चुना गया। इस अवसर पर सी–डैक मोहाली ने अपने केन्द्र पर विकसित किए गए दो उत्पादों वायरलेस इसीजी और वायरलेस डिजिटल स्टेथोस्कोप का प्रदर्शन किया।

चिल (1) ECG-GGD

(2) Stethoscope-CGD

योगा की उत्पत्ति

योगा की उत्पत्ति संस्कृत शब्द पज से हुई। योग शब्द के दो अर्थ हैं और दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं। पहला जोड़ना और दूसरा समाधि तक पहुँचना।

योगा करने के कई लाभ हैं। योग के माध्यम से शरीर, मस्तिष्क और मन को पूर्ण रूप से स्वस्थ किया जा सकता है। यदि शरीर स्वस्थ होगा तो हम कोई भी काम कर सकते हैं। मन को शान्त रखने के लिए हम कोई भी ध्यान कर सकते हैं जिसका दूसरा नाम समाधि है।

योग सभी धर्मों का महत्त्वपूर्ण अंग है। ये पद्धति प्राचीनकाल से चली आ रही है। वेद पुराण आदि गन्थों में योग के अनेक प्रकार बताए गए हैं। ज्ञान योग, कर्म योग और भक्ति योग।

विज्ञान के क्षेत्र में मनुष्य का जीवन सरल जरूर बन गया है, और चिकित्सा के क्षेत्र में भी विज्ञान ने अभूतपूर्व विकास किया है। परन्तु योग का महत्त्व भी दिन भर दिन बढ़ता जा रहा है। क्योंकि आज के समय में मनुष्य एक मशीन की तरह काम करता है जिस से उसके तनाव का स्तर बढता जा रहा है जिस कारण वह कई बीमारिया का शिकार हो जाता है। दुनिया को योग सिखाने वाला केवल भारत ही नहीं, पूरे विश्व में योग का प्रचार प्रसार बहुत तेजी से हो रहा है।

इसी तरह 2015 में प्रधान मंत्री द्वारा चलाई गई मुहिम पूरी हुई, अब से हर साल 21 जून को दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया जाएगा। मोदी जी की इस पहल को 177 देशों का समर्थन मिला। इसमें केवल व्यायाम ही नहीं होता, बल्कि यह प्रकृति और मनुष्य के बीच में जोड़ने की कड़ी है। इसी के अन्तर्गत सी–डैक, मोहाली में भी 21 जून को योग दिन मनाया गया। इस आयोजन का प्रबंध श्री दीपक राणा ने किया, इसमें सी–डैक के कर्मचारियों और अधिकारियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। इसमें कई कर्मचारियों के परिवारों के सदस्यों ने भी इसका लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त विभिन्न विभागों के प्रमुखों ने भी भाग लिया। और भविष्य में भी इसको निरंतर रखने का भी संकल्प लिया।

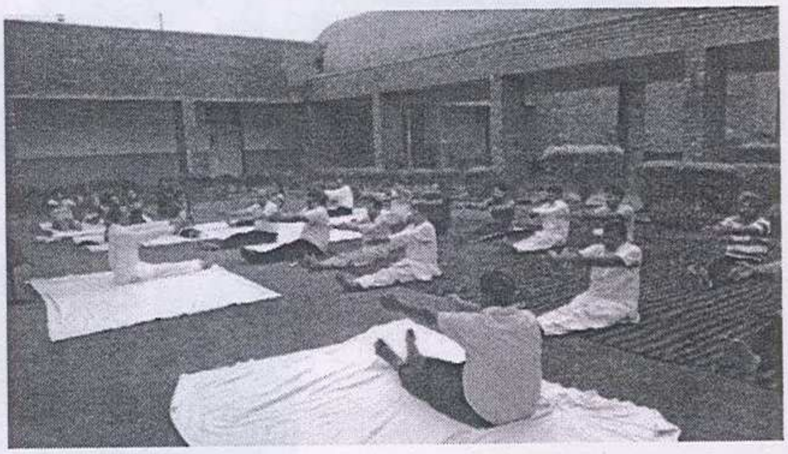

सुषमा कौशल
सहायक

डिजिटल इंडिया सप्ताह

सी–डैक मोहाली में 2 जुलाई, 2015 से लेकर 7 जुलाई, 2015 तक 'डिजिटल इंडिया सप्ताह' का आयोजन किया गया। 'डिजिटल इंडिया' भारत सरकार की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण योजना है जिसके द्वारा भारतवर्ष को एक डिजिटल रूप से सशक्त देश के रूप में विकसित करने का लक्ष्य रखा है।

इस सप्ताह के दौरान सी–डैक मोहाली ने अपने केन्द्र में विकसित की गई तकनीकि और उत्पादों का प्रदर्शन किया।

इस प्रदर्शनी में वायरलेस इ.सी.जी., वायरलेस डिजिटल स्टेथोस्कोप, टेलिमेडिसीन और साइवर सुरक्षा के उत्पाद मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहे।

इस दौरान सी–डैक मोहाली ने विभिन्न विद्यालयों में प्रशिक्षण शिविरों का सफल आयोजन किया।

• स्वचालित वायोकेमिस्ट्री एनालाइजर

चित्र (1) Stethoscope-DIW
(2) ECG-DIW
(3) DIW-DIR
(4) ABC-DIW
(5) Telemedicine-DIW

इन्सान की सोच

इन्सान की सोच ही उसे छोटा या बड़ा बनाती है। अगर वह सोच ले कि यह उस की किस्मत में है वह जरूर मिलता है लेकिन अगर वह मन में यह सोच ले कि उस के साथ कभी अच्छा नहीं होता और न कभी अच्छा होगा तो वही सोच उस के जीवन का हिस्सा बन जाती है, जैसे जैसे वो सोचता है वैसे ही उस के जीवन में होता रहता है।

ऐसी ही ये कहानी कमला के जीवन की है, बचपन से ही कमला के मन की सोच थी कि वह अपने जीवन में पढ़ लिख कर एक अच्छी अध्यापिका बनेगी, लेकिन उस के घर के हालात ऐसे थे कि उन को दो वक्त का खाना भी नसीब नहीं होता था, उस के माँ–बाप अन्धे थे, जो अपनी बेटी के लिए कुछ नहीं कर पा रहे थे, इस बात का उन को बहुत अफसोस था। कमला दूसरों के घरों में काम करने जाया करती थी। उन पैसों से वह अपने माता–पिता को दो वक्त का खाना खिला पाती थी, लेकिन कमला के अन्दर जो कुछ बनने का जज्बा था वो कभी खत्म नहीं हुआ। वह जिस घर में काम करती थी, उस की मालकिन बहुत अच्छी थी। उसने देखा कि कमला को पढ़ने का बहुत शौक है तो उसने उस की मदद की जिस से कमला दिनभर काम करती और रात को पढ़ती थी, और अच्छे नम्बर हासिल करती थी। इस प्रकार वह धीरे धीरे अपने सपनों की ओर बढ़ती गई। उस के माता–पिता बहुत खुश थे कि उन की बेटी का जो सपना था वह पूरा हो रहा है।

इस प्रकार कमला अपनी मेहनत और लगन से एक दिन अध्यापिका बन गई और उस ने गरीब बच्चों को पढ़ाने का प्रण किया, जो कुछ बनना चाहते हैं पर अपने हालातों के कारण अपनी सोच को खत्म कर देते हैं।

इन्सान की सोच ही उसे उस के मुकाम तक पहुंचाती है, अगर वह मन में यह धारण बना ले कि उस ने यह हासिल करना है तो भगवान भी उस की सोच को नहीं बदल सकते बल्कि उस की मंजिल तक पहुंचने में उस की मदद करते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इन्सान की सोच ही उसे बड़ा या छोटा बनाती है।

''पाने की चाह अगर दिल में हो तो
आँधियाँ भी इन्सान को कमजोर
बना कर उस की सोच को
छोटा या बड़ा नहीं कर सकती''

बलबीर कौर
प्रोजेक्ट सर्विस रिपोर्ट

सूत्रपात

बदलते अहसास

जैसे–2 इन्सान आधुनिकता की तरफ बढ़ता जा रहा है, उसका जीने का ढंग, अपनों के साथ रहने का ढंग, रिश्तों को देखने का नजरिया और इन रिश्तों में बसे प्यार को महसूस करने का अहसास भी बदल गया है। आधुनिक जीवन शैली ने इन्सान की जिन्दगी में बहुत कुछ बदल दिया है। आज के दौर का आम इन्सान तो सही ढंग से प्यार, जिन्दगी या इन रिश्तों का अहसास ही नहीं कर पाता, या हम कह सकते हैं कि उसके पास इतना समय ही नहीं कि वो इस अहसास को, प्यार को महसूस कर सके। वो तो बस भाग रहा है, इस भीड़ में, कुछ पाने को, कुछ खुद को बनाने को। पर शायद उसको खुद ही पता नहीं उसे क्या चाहिए, किस लिए और किसके लिए। जिस दौड़ में वो भाग रहा है, क्या वो उसको वो सब दे रही है जो उसको चाहिए था। एक प्यार, एक मुस्कराहट उस बेचारे इन्सान को तो भागते–2 इस बात का भी अहसास नहीं कब इस भीड़ ने, कब इस दौड़ ने उसके चेहरे की छोटी सी मुस्कराहट छीन ली। उसको तो ये भी अहसास न हुआ कि कब उससे प्यार करने वाले दिल, उसके अपने, दोस्त, उसके अपने रिश्ते, इस दौड़ में, इस भीड़ में कहीं बहुत दूर उससे बहुत दूर रह गए। उसको पता ही नहीं चला कब बेजान चीजों के पीछे भागते, दूसरों से अपने को ऊपर उठाने में उसने क्या खो दिया। बात है तो बस अहसास की। आज के इन्सान को अहसास ही नहीं कि वो क्या खो रहा है। अपनों से ज्यादा उसे चीजों से प्यार है। पर क्यों। सिर्फ बात है तो आज के समय में बदलते हुए अहसास की।

ये अहसास बदलते क्यों हैं, ये प्यार बदलते क्यों हैं। शायद इसका एक कारण हमारा जिन्दगी जीने का ढंग है और दूसरा शायद इस जिन्दगी को समझने का, महसूस करने का नजरिया। आज के इन्सान का जीवन इतना व्यस्त हो गया है कि उसकी जिन्दगी में उसको इन रिश्तों में, अपनों के साथ, दोस्तों के साथ, जो एक अहसास होता है प्यार का, उसको मजबूत बनाने का समय ही नहीं मिल पाता। ना वो इनको समझने के समय निकाल पाता है, ना इनको सुधारने का, हम कहते हैं, लोग तो आज भी साथ रहते हैं, आज भी बच्चे माँ–बाप का करते हैं और माँ–बाप बच्चों का, आज भी दो सच्चे दोस्त होते हैं, आज भी हीर–रांझा जैसे प्रमी होते हैं। हाँ आज भी ये सब कुछ होता है पर आज के समय में इन्सान में वो अहसास, वो प्यार नहीं। शायद आज का इन्सान इस अहसास से काफी पहले से अलग हो गया है आज बच्चों के पास अपने बूढ़े माँ–बाप के लिए समय, तो माँ–बाप के पास अपने बच्चों के लिए, पति के लिए अपनी पत्नी के लिए समय नहीं, तो पत्नी के पास पति के नहीं।

पर शायद इन बातों के लिए हम खुद जिम्मेवार हैं। हमने अपनी खुशियों को अपने से खुद ही दूर किया है। हमने (इन्सान) ऐसा भागना शुरू किया है जिसका कोई अंत नहीं है। इस आधुनिकता ने हमें बहुत कुछ दिया है पर हमसे हमारा बहुत कुछ छीनकर। हमें इस जीवन शैली ने एक दौड़ में डाल दिया है जिसका कोई अंत ही नहीं पर, इस दौड़ ने इन्सान के अन्दर के अहसास को ही बदल के रख दिया है।

हमें चाहिए कि हम इस दौड़ में शामिल न होकर, अपनों के लिए समय निकालें, खुद के लिए, अपने दोस्तों के लिए, और अपने प्यार के लिए समय निकालें। ताकि जो अहसास, प्यार हमसे दूर चला गया है उसको हम फिर से अपने अन्दर महसूस कर पाएं। तांकि हम सच्ची शांति और सच्ची खुशी हासिल कर पाएं। और फिर से अपने चेहरों पर खुशी से भरी एक सच्ची मुस्कराहट का अहसास कर सकें।

स्नेह गर्ग
प्रोजेक्ट इंजीनियर

मनोहारी यात्रा

एक जगह जहाँ पहुँचते ही ऐसा लगा कि स्वर्ग में पहुँच गए हैं। इतनी साफ–सफाई और हरियाली कि देखते नहीं बनती। साफ–सुथरी सड़कें, चारों तरफ हरे–भरे पेड़, जगह–जगह क्यारियों में रंग–बिरंगे फूल खिले हुए, जहाँ के लोग मानों दुनिया के हर इन्सान की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं और उनका भव्य स्वागत करते हैं। चारों ओर ऊँचे पर्वत मानो आसमान छू रहे हों, विशाल घाटियां अपनी ओर खींचती हैं। बड़े–बड़े सुन्दर मठ और मन्दिर। नहीं देखो धरती पर ऐसी जगह – यह है चमकती दमकती सिक्कम राज्य की भूमि।

पूर्व हिमालय में स्थित दुनिया की तीसरी सबसे ऊँची चोटी कंचनजंघा के पंखों के नीचे 7096 वर्ग किलोमीटर में फैला है सिक्कम का क्षेत्र। समुन्द्र से 280 मीटर से 8586 मीटर तक ऊँची गौरवशाली पहाड़ों में लूभाबना मौसम रहता है। जिस के पास समय हो उसकी झोली में डालने के लिए बहुत कुछ है इस धरती के पास। जून 2013 में मुझे भी मौका मिला सिक्कम की राजधानी गैंगटोक जाने का। मन में भरपूर उत्साह लिए हम चार परिवार गैंगटोक पहुँचे। मोहाली में 42° तापमान से निकलकर गैंगटोक में मात्र 20° तापमान मानों हृदय को सकून दे रहा हो।

जब हम गैंगटोक पहुंचे तो खूब तेज़ वर्षा हो रही थी। रात भर खूब वर्षा हुई। अगले दिन सुबह जल्दी उठ कर हम तैयार हुए सोंगमो या चांगू झील जाने के लिए जो कि समुन्द्र तट से 12400 मीटर की ऊँचाई पर है। हम होटल से टैक्सी लेकर निकले। वहां से निकलते ही एक चीज़ जो भा गई वह थी कि लाल बत्ती होने पर सारी गाड़ीयां एक ही लाईन में खड़ी हो गई। न तो हार्न की कान को फाड़ने वाली आवाज और न ही एक दूसरे से आगे निकलने की होड़। पुरानी खूबसूरत इमारतें, हरे पेड़ों से घिरी हुई। सड़कें अच्छी बनी हुई थीं परंतु निरंतर वर्षा के कारण कई जगहों से बड़े–बड़े पत्थरों के ऊपर से गाड़ी को निकालना पड़ रहा था।

तसांगो झील पहुंचे। बहुत ही शांत वातावरण। काफी ठंड महसूस हो रही थी। यह अंडाकार झील है जो कि एक किलोमीटर लंबी और पंद्रह फीट गहरी। वहां के लोगों की इस झील में बहुत आस्था है। इस प्राचीन झील से मात्र 5 किलोमीटर की दूरी पर चीनी सीमा क्रासिंग है। वहां हमने मोमोस खाए जो कि गैंगटोक में बहुत लोकप्रिय हैं। नूडल्स से बने अन्य लोकप्रिय भोजनों में थुपका, चाडमिन आदि हैं भी हमें बहुत पसंद आए। झील के बाद हम बाबा हरभजन सिंह मेमोरियल मंदिर गए, जो कि जेलेप्ला दर्रे और नाथूला दर्रे के बीच स्थित है। इस मंदिर में मनोकामनाएं पूर्ण करने की शक्तियां हैं। वहां लगातार वर्षा हो रही थी और काफी ठंड थी। इतनी ठंड में फौजी जवानों को अपनी डयूटी करते देख भारत के जांबाज सैनिकों की बहादुरी

आँखों के सामने तैर जाती है। वहां मंदिर में माथा टेका और बाबा जी के जीवन के बारे में जानकारी ली। वापिस गैंगटोक की ओर चल पड़े। अगले दिन गैंगटोक में अन्य पर्यटक स्थल दखे जैसे कि गणेश टॉक, जो कि भगवान हनुमान को समपित है और शांत वातावरण में पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। फिर हम रूमटेक मठ गए जो कि तिब्बती बौद्ध धर्म में अत्याधिक लोकप्रिय है। हस्तशिल्प और हथकरघा निदेशालय, ताशीव्यू प्वाईंट, झरने आदि का आनंद लिया। वहां से हम निकल पड़े दार्जीलिंग की ओर जिसे कि पहाड़ों की रानी भी कहा जाता है। यह पश्चिम बंगाल का एक बहुत ही मशहूर पर्यटक स्थल है और चाय के बागों के लिए जाना जाता है। चाय के बागों का नज़ारा देखते ही बनता है। सिलीगुड़ी से दार्जीलिंग 'टाप ट्रेन' चलती है जिसकी पटड़ी सड़क के साथ–साथ चलती है। देखकर हैरानी होती है कि कैसे अंग्रेजों ने पहाड़ काट कर गाड़ी की पटरो बनाई। यहां विश्व की सबसे पुरानी रेल पटरो है जो कि पहाड़ों में बिछाई गई है। इस इलाके को गोरखालैंड भी कहा जाता है।

अगले दिन हम टाईगर हिल देखने गए जहां से सुबह सूर्य की पहली किरण कंचनजंघा को रोशनी देती है वहां से वार मेमोरीयल, पदमाजा नायहू हिमालयन जूलोजीकल पार्क, टी गार्डन बोटेनीकल गार्डन, जेपनीज़ टैंपल, केवल कार आदि देखे।

चाय के बाग में औरतें पीठ पर टोकरियां बांधे चाय की पत्तियां तोड़ रहीं थी। अगले दिन हम मिरिक झील देखने गए जो कि दार्जीलिंग से 50 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहां का मौसम और कुदरती सुन्दरता मन को मोह लेती है। झील की दूसरी ओर चील के बड़े पेड़ उस जगह की शोभा और बढ़ा देते हैं।

घूमते – घूमते समय का पता ही नहीं चला और हमें वापसी के सफर की तैयारी करनी पड़ी। घर से निकले हुए आठ दिन हो चुके थे पर हमारे लिए मानो समय थम गया था। वहां से वापिस आने की तमन्ना नहीं थी। सिक्कम की सुंदर वादीयों के बारे सोच कर मेरा दिल आज भी खिल उठता है।

हरप्रीत कौर
वरिष्ठ सहायक

सूत्रपात

इन्सानियत

दुनिया की भीड़ में न जाने कहाँ खो गई इन्सानियत। कभी कभी सोचता है मेरा मन कि आजकल के लोग दुनिया की भाग दौड़ में इन्सानियत क्यों खो बैठे हैं। क्यों इन्सानों के अन्दर एक दूसरे के प्रति प्यार और स्नेह की भावना खत्म होती जा रही है?

क्यो हम दूसरों की खुशियों को देखकर खुश नहीं होते? क्यों हम दूसरों की मदद करने में हिचकिचाते हैं? जात पाज ऊँच नीच एक दूसरे को छोटा समझना, क्यों हम ऐसी बातों में उलझ जाते हैं?

इस संसार में सबको अपने–अपने स्वार्थ की पड़ी है। क्या कोई किसी और के बारे में नहीं सोच सकता? क्या सबको खुश रहने का हक नहीं है? अगर यू हीं हमारे अन्दर की इन्सानिये खत्म होती रही तो हमें इन्सान कहेगा कौन? अपने लिए तो सभी जीते हैं। कभी दूसरों के लिए भी जीकर देखो कितना आनन्द आएगा। उस खुशी को आप कल्पना भी नहीं कर सकते यदि आप 'में' से बाहर न निकले।

हम सब को मिलकर इस पर विचार करना चाहिए। भगवान ने हमें यह जीवन दिया है जो बहुत अनमोल है। हमें इसे अच्छे कार्यों में लगाना चाहिए। एक दूसरों की मदद करनी चाहिए। जिससे हमारा जीवन सफल हो सके। "मैं" की भावना को छोड़कर "हम" की भावना रखनी चाहिए।

हमें इस संसार में इस तरह रहना चाहिए। कि हमारे वचनों, कर्मों अथवा ख्यालों से किसी भी जीव–जन्तु के मन को ठोस न पहुंचे।

अपने रोज मरहा के कार्य से हट कर कुछ पल इन्सानियत की भावना को मन में उजागर करने का प्रयत्न करें ताकि हम सब का जीवन सरल और सफल बन सके।

आओ थोड़ा दूसरों को भी खुशी दें अथवा दूसरों के लिए भी जीना सीखें।

इन्सानियत है जहाँ।

खुशहाली है वहाँ।।

राम करन यादव

हॉर्टीकल्चर सुपरवाइजर

सूत्रपात

नारी–सशक्तिकरण

आमतौर पर हमारा समाज एक पुरुष प्रधान समाज रहा है, महिलाओं को हमेशा यहां निचले दर्जे का स्थान ही प्रदान किया गया है। पहले महिलाओं के पास किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता न होने के कारण उनकी सामाजिक तथा पारिवारिक स्थिति बहुत ही गंभीर थी। जिसे हर कदम पर एक पुरुष के सहारे की जरूरत पड़ती थी। वैसे तो आजादी के बाद से ही महिला उत्थान के उद्देश्य से विभिन्न प्रयास किये जाते रहे हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में महिला सशक्तिकरण में अत्याधिक तेजी देखी गई है। इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप महिलाओं के आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हुई है और वे किसी भी चुनौती को स्वीकार करने के लिए खुद को तैयार करने लगी है।

आज की महिलाएं सिर्फ घर गृहस्थी को संभालने तक ही सीमित नहीं रही है। बल्कि उन्होंने हर क्षेत्र जैसे की व्यावसायिक क्षेत्र हो या पारिवारिक, महिलाओं ने यह साबित कर दिया है कि वे हर वो काम कर सकती है जो कभी पुरुष के योग्य समझा जाता था आजकल की महिलाएं शिक्षा और आत्म–निर्भर बन जाने के कारण वह अपने ऊपर विश्वास करके अपने जीवन संबंधी निर्णय लेने लगी हैं।

लेकिन नारी सशक्तिकरण की पैरवी करते हुए हम इस बात को नकार नहीं सकते कि जब हम किसी एक को सशक्त करने की बात करते हैं तो स्वभाविक तौर पर हम दूसरे व्यक्ति के अधिकार क्षेत्र को सीमित कर रहे हैं दूसरे शब्दों में कहा जाए तो महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए जरूरी है कि पुरुष की महत्ता को कम कर दिया जाए ऐसे हालातों में भारतीय पुरुष जो दबी–कुचली महिलाओं का शोषण करते हैं। वह इस बात को सहन नहीं कर पा रहे कि महिलाएँ अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने लगे, यही कारण है कि महिला सशक्तिकरण को बहुत अधिक महत्व दिए जाने के बावजूद, पुरुष महिलाओं की आजादी को अपने लिए घातक मानकर चल रहा है।

हम आमतौर पर सरकार द्वारा बनाई गई योजनाओं को अपना लेते हैं लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि महिलाओं के लिए बनाई गई योजनाएं उन्हें अधीनस्थ और शोषित होने का अहसास दिलवाती है, घरेलू हिंसा को रोकने और स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने जैसे कानून भो हमारे समाज की कड़वी हकीकत के बयान करते हैं समय में परिवर्तन हो जाने के बावजूद भी पुरुष आज भी स्वयं को महिलाओं को सम्मान देना पसंद नहीं करते।

दुर्भाग्यवश नारी सशक्तिकरण केवल शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं रह गया है, एक ओर बड़े–बड़े शहरों और महानगरों में रहने वाली महिलाएं तथा शिक्षित

सूत्रपात

महिलाएं अपने साथ हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाना तथा लड़ना जानती हैं तथा उन्हें सम्मानजनक स्थिति भी प्राप्त है, वही दूसरी तरफ गांव में रहने वाली महिलाएं ना तो अपने अधिकारों को जानती हैं और न ही उनके महत्व को समझती हैं जिस कारण वह पति के अत्याचारों तथा सामाजिक लक्षणों को सहन करने को विवश हो जाती हैं।

हमारा पुरुष प्रधान समाज जिन संस्कारों, परंपराओं तथा मर्यादाओं की दुहाई के आधार पर महिलाओं को अपने द्वारा निर्मित दायरे में बांध कर रखना चाहता है जहां पुरुषों के लिए कोई भी सीमाएं, दायरे तथा परम्पराओं की कोई बात नहीं की जाती है आमतौर पर पुरुषों के लिए किसी गलत कार्य के लिए कोई ठोस सजा नहीं दी जाती, वहीं अगर कोई महिला इन बंधनों को तोड़ कर बाहर निकलना चाहे तो उसे हमारे समाज के ताहने तथा कोप दृष्टि का पात्र बनना पड़ता है भले ही आधुनिकता केवइ हमारे पहनावे और व्यवहार में आई है लेकिन चरित्र और विचारों में हमारा समाज अभी भी पिछड़ा हुआ है। आज महिलाएं गृहणी से लेकर एक सफल व्यावसायी की भूमिका को सहज ढंग से निभा रही है वह स्वयं को पुरुषों से बेहेर साबित करने का एक भी मौका गंवाना नहीं चाहती। आधुनिक युग की महिलाएं पुरुष के समक्ष ही नहीं, बल्कि कई क्षेत्रों में तो पुरुषों को भी चुनौती दे रही है अपनी मेहनत और काबिलियत के बल पर उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

राजन खन्ना
प्रोजेक्ट सर्विस सपोर्ट

आओ मिलकर प्रदूषण घटाएं

आओ मिलकर प्रदूषण घटायें
हरा भरा यह देश बनाएं
वातावरण को स्वच्छ बनाकर
इस जीवन को स्वस्थ बनाएं।

जंगल न अब जलने पाएं
न ही पहाड़ अब घटने पाएं
मिलकर हम सब कसम यह खाएं
जन जीवन की उम्र बढ़ाएं।

इठलाती, बलखाती नदियाँ
सागर में सम्मिलित हो जाएं
फल फूलों से सजी हो धरती
पंछी मधुर संगीत सुनाएं।

आओ मिलकर यह प्रण उठाएं
जीवन में परिवर्तन लाएं
सृष्टि की हर सृजना को
विसर्जन से हम बचाएं।

वायु प्रदूषण को संतुलित कर
ऋतुओ के क्रम को सही बनाएं
पतझड़ में बिखरे पत्तों को
जलाएं नहीं हम दफ़नाएं।

शहर की तंग गलियारों को तोड़
पेड़–पौधों की जगह बनाएं
खुली हवा में सांस लें
जीवन में हम संतुष्टि पाएं।

उन्नति विकास की राह पकड़ें
पर मानव जीवन को संतुलित बनाएं
पृथ्वी का परिवर्तन छोड़ कर
स्व–जीवन में परिवर्तन लाएं।

प्रतिदिन की भाग दौड़ में
ईंधन की खपत घटाएं
कम दूरी पर पैदल चलकर
रोग–मुक्त और तंदुरुस्ती पाएं।

किताबी उपचारण से बाहर निकलकर
कम से कम एक पेड़ लगाएं
पल पल बढ़ते प्रदूषण पर
आओ मिलकर रोक लगाएं।

फल–फूलों से सजी इस धरती को
आओ हम और सजाएं
आओ मिलकर प्रदूषण घटाएं
हरा भरा यह देश बनाएं।

सुनीत मदान
प्रधान तकनीकी अधिकारी

मन

मन है मन फिरता रहता है
यहाँ वहाँ आवारा सा
कुछ तो बात हुई है शायद
फिरता ये बंजारा सा।

फिर वो हवा चली है शायद,
फिर वो महक उठी है शायद
सोंधी सी दुःख के यादों की
फिर वो उली घुली है शायद,
मन के इस टूटे तारों से
फिर बजता इकतारा सा
कुछ तो बात हुई है शायद
फिरता ये बंजारा सा।

फिर कुछ छूट रहा है शायद
फिर कुछ टूट रहा है शायद
आज ये मन शीशे के जैसा
टुकड़ों में टूट रहा है शायद
चुप है ये क्योंकि जानता है
मिटना होगा हारा सा
कुछ तो बात हुई है शायद
फिरता ये बंजारा सा।

प्रतिभा पाल
प्रोजेक्ट असिस्टैंट

कविता

जीभ जन्म से होती है,
और मृत्यु तक रहती है क्योंकि वो कोमल होती है
दाँत जन्म के बाद आते हैं,
और मृत्यु से पहले चले जाते हैं।
क्योंकि वो कठोर होते हैं,
छोटा बनके रहोगे तो बहुत मिलेगा सत्कार
बड़ा होने पर तो मां भी गोद से उतार देती है
पानी के बिना खाली नदी भी बेकार
अतिथि के बिना आँगन बेकार है
प्रेम न हो तो सगे–सम्बन्धी बेकार हैं
पैसा न हो तो पाकेट बेकार है
जीवन में गुरु न हो तो जीवन बेकार है
इसलिए जीवन में गुरु का होना जरूरी है गुरूर का नहीं

पर आजकल के दोहे इस प्रकार हैं
नयी सदी से मिल रही दर्द भरी सौगात
बेटा कहता बाप से, तेरी क्या औकात।
आँखों में पानी भरा, मरे शर्म के लाज
बहू सास से कहे, घर में मेरा राज।
आज भाई भी भाई पर विश्वास करता नहीं
आज बापू भी बोझ लगे, पत्थर लगे गणेश।
पत्थर के भगवान हैं, पत्थर दिल इंसान
पत्थर के भगवान को लगते छप्पन भोग
मर जाते फुटपाथ पर, भूखे प्यासे लोग
फैला है पाखंड का, अन्धकार सब ओर।
बेटा बाहर करता फिरे भंडारे, घर में भूखा बैठा बाप
कैसा है ये जमाना आया।

सुषमा कौशल
सहायक

बेटी को पुकार

दिया है जन्म हमें ऊपर वाले ने तो, जीने दो हमें,
खुशियों में हँसने और दुख में रोने दो हमें।
क्या कुसूर है हमारा? कभी लड़कों जैसा सम्मान मिला नहीं,
सम्मान तो छोड़ो, हमें समाज में कभी इंसाफ मिला नहीं।
क्यों रोते हो हमारे जन्म पर? क्या इतने बुरे हैं हम?
बेटी, बहू, माँ का सुख देती हैं हम।
कभी की है कोशिश हमें समझने की?
या समझा है हमें केवल पूँछ मरदों की?
क्या छीना है हमने समाज का, जो अब
यह हमारे जीवन जीने का हक छीन रहा है
क्या यह समाज केवल लड़कों
के संसार के स्वप्न बुन रहा है?
अगर पहले भी लोग लड़की के जन्म से पहले गर्भपात कराते,
तो क्या आज किसी के वंश आगे बढ़ पाते?

गुस्सा

तौबा कर लो, गुस्से से,
बेकार न तैश में आओ।
बात बिन बात आपा न खोओ,
अकारण ताव न खाओ।
बुरी बात है, गुस्सैल होना,
इससे छुटकारा पाओ।
बार–बार गुस्से में आकर,
अमूल्य ऊर्जा न गंवाओ।
अपनी इस आदत के कारण,
क्रोधी न तुम कहलाओ।
स्वयं पर काबू रखना सीखो,
व्यवहार से परिवर्तन लाओ।

भावना पठानिया
प्रोजेक्ट सर्विस सपोर्ट

अच्छे वचन

आदमी की सुन्दरता उसकी विनम्रता है।
चिन्ता आयु को खा जाती है।
मेहमान के आदर से बढ़ाई मिलती है।
सबसे अच्छा दान क्षमादान है।
दान से धन की कमी नहीं आती है।
सबसे अच्छा नशा जनता की सेवा है।
सबसे बहादुर बदला न लेने वाला है।
अगर दान मुसीबतों को खाता है तो रिश्वत इन्साफ को।
गुस्सा अक्ल को खाता है पछतावा पाप को धो देता है।
और इन सब बातों को जीवन म अपनाने से इन्सान अपना
जीवन अच्छे तरीके से व्यतीत कर सकता है।

जिंदगी

जिस राह से भी गुजरे हम,
एक नाम सुना जिंदगी।
हमने भी चाहा कोई हमको बता दे,
क्या चीज है यह जिन्दगी।
थके हुए राही ने कहा,
रुकना ही है जिन्दगी।
और अपाहिज ने कहा,
चलना ही है जिन्दगी।
गरीबों में तड़पते हुए इन्सान ने कहा,
पैसा ही है जिन्दगी।
खुशियों में डूबे हुए किसी इन्सान ने कहा,
प्यार ही प्यार है जिन्दगी।
टगर कोई गगन से भी पूछे,
कि क्या चीज है जिन्दगी।
ठोकर खाकर सम्भल जाने का,
नाम है जिन्दगी।

कंचन
प्रोजेक्ट सर्विस सपोर्ट

कविता

तिरंगा हमारा, तिरंगा हमारा, सबसे प्यारा तिरंगा हमारा
जिसपे मर मिटने की कसम खाते हैं हम, वो भारत देश हमारा
तिरंगा हमारा तिरंगा हमारा
सोने की चिड़िया सा कहलाने वाला सच्चा भारत देश हमारा
तिरंगा हमारा, तिरंगा हमारा, सबसे प्यारा तिरंगा हमारा
भगत सिंह, राजगुरू, लक्ष्मीबाई इस देश की शान हैं
वे न्यारा भारत हमारा, तिरंगा हमारा तिरंगा हमारा।।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई मिलकर रहते सारे भाई–भाई
वो गौरवशील भारत हमारा, प्यारा भारत हमारा
तिरंगा हमारा तिरंगा हमारा सबसे प्यारा तिरंगा हमारा।।

मोदी भाई मोदी भाई, आया अपना मोदी भाई
जनता के बलवूते से बी.जे.पी. का नया सिपाही, आया अपना मोदी भाई
कांग्रेस को सबक सिखाने, सोनिया को आइना दिखाने आया अपना मोदी भाई
अब तो हर चाय वाला भी हो गया है भाई–भाई, मोदी भाई मोदी भाई
अब कमल बन गया है सबका भाई, हाथ मलते रह गए जमाई
मोदी भाई मोदी भाई आया अपना मोदी भाई
छप्पन ईंच की छाती लेकर करने आए झाड़ू की सफाई
स्वच्छ भारत का एजेन्डा लेकर, भारत को सुन्दर करने आया अपना मोदी भाई
देश को नया बनाने, हर घर में खुशियां लाने, विश्व में भारत का डंका बजाने
आया अपना मोदी भाई मोदी भाई ।।

प्रांजल
(सपुत्र श्री राज कुमार)

हिन्दी के बारे में महापुरुषों के कथन

प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिन्दी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती। सारे प्रान्तों की सार्वजनिक भाषा का पद हिन्दी या हिन्दुस्तानी को ही मिला है। –सुभाष चन्द्र बोस

मैं उन लोगों में से हूँ जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।

–बाल गंगाधर तिलक

हिन्दी किसी के मिटाने से मिट नहीं सकती।

–चन्द्रबली पाण्डेय

हिन्दी को गंगा नहीं बल्कि समुद्र बनना है।

–विनोबा भावे

हिन्दी एक जानदार भाषा है। वह जितनी बढ़ेगी देश का उतना ही नाम होगा।

–जवाहर लाल नेहरू

अब कुछ मेरी तरफ से

हिन्दी हमारी मन की भाषा है हम जब सोचते हैं तो हिन्दी में ही सोचते हैं अंग्रेजी में नहीं। जो वस्तु हमारे मन में बसी हो उसे मिटाया नहीं जा सकता। कई सालों के अंग्रेजी राज ने उसे कुछ दबा तो दिया है मगर समय के साथ–साथ दबाव कम हो रहा है और हिन्दी अपना सुन्दर स्वरूप ग्रहण कर रही है। अब तो हिन्दी विदेशों में भी अपना आहार बना रही है। ब्रिटेन के ही कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। हिन्दुस्तान जैसे देश को एक भाषा के सहारे संबोधित करना होता वह सिर्फ हिन्दी ही है।

शशी कुमार गोस्वामी
मानव संसाधन अधिशासी

अमूल्य बातें / अनमोल वचन

सफल इन्सान बनने की कोशिश करने की बजाए सिद्धांतों वाला इन्सान बनने की कोशिश कीजिए। —अल्बर्ट आइंस्टीन

सम्पूर्ण विश्व मेरा देश है सम्पूर्ण मानव समाज मेरा बन्धु है और भलाई करना ही मेरा धर्म है। —थामस सैन

बुराई का सम्पर्क हमारी अच्छी आदतों को भी खराब कर देता है। —प्रेमचन्द

जो भगवान को जान लेता है वह पाप करने से बच जाता है।

—महाकवि संत गंगादास

कभी—कभी उन लोगों से भी शिक्षा मिलती है जिन्हें हम अभिमानवश अज्ञानी समझते हैं। —प्रेमचन्द

भय, क्रोध, अंहकार, ईर्ष्या तथा क्रोध पर काबू पा लेने वाला सच्चा योगी है।

—महार्षि अरविन्द

अहकार ऐसी आग है जो तमाम संचित पुण्यों को जलाकर नर्क की ओर धकेल देती है। —संत कबीरदास

महापुरुषों की संगति से तथा बातचीत से अच्छे फल की प्राप्ति होती है। —सोमदेव

सत्य का प्रभाव स्वतः प्रकट होकर रहता है। सत्य में असीमित बल व तेज होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

दुख दूर करने की एक ही औषधि है, मन से दुख की चिन्ता न करना। —महाभारत

बीती बात के लिए शोक तथा भविष्य के लिए निरर्थक चिन्ता न करके वर्तमान के लिए प्रयत्नशील रहने वाला ही ज्ञानी है। —चाणक्य

प्रत्येक कर्तव्य पवित्र है। समर्पित भावना से किया गया कर्तव्य ईश्वर की सर्वोच्च उपासना है। —स्वामी विवेकानन्द

जब अपने दोष दिखने लगते हैं तभी से उत्कर्म का आरम्भ होता है।

—रामकृष्ण परमहंस

सत्यपरायण मनुष्य किसी से धृणा नहीं करता। —बुद्ध

सूत्रपात

पवित्रता वह धन है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होता है। निरंतर कार्य करने वाला व्यक्ति कभी दुखी नहीं होता। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

निकृष्ट साधनों से उत्कृष्ट फल की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती, शुद्ध उद्देश्य के लिए साधन भी शुद्ध होने चाहिए। —आचार्य विरेन्द्र देव

मनुष्य के जीवन में सन्तोष होना स्वर्ग प्राप्त करने के समान है। —वेद व्यास

सदा सत्य बोलो झूठ बोलने वालों का लोग तिरस्कार करते हैं।

—स्वामी शरणानन्द जी

आदर्शवादी व्यक्ति वह है जो दूसरों की समृद्धि में सहायक हो। —हेल्रीफोर्ड

अहिंसा वास्तविक शक्ति का प्रतीक है। —डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

जो मनुष्य खूब सोच विचार कर काम करता है, आरम्भ किये काम को बिना समाप्त किये नहीं छोड़ता किसी भी समय काम करने से मुँह वही मोड़ता और इन्द्रियों को वश में रखता है वही पंडित है। —विदुर

नवरूप कोहली
प्रोजेक्ट असिस्टैंट

Samanvay Manchanda
STD III
s/o Chetan Manchanda

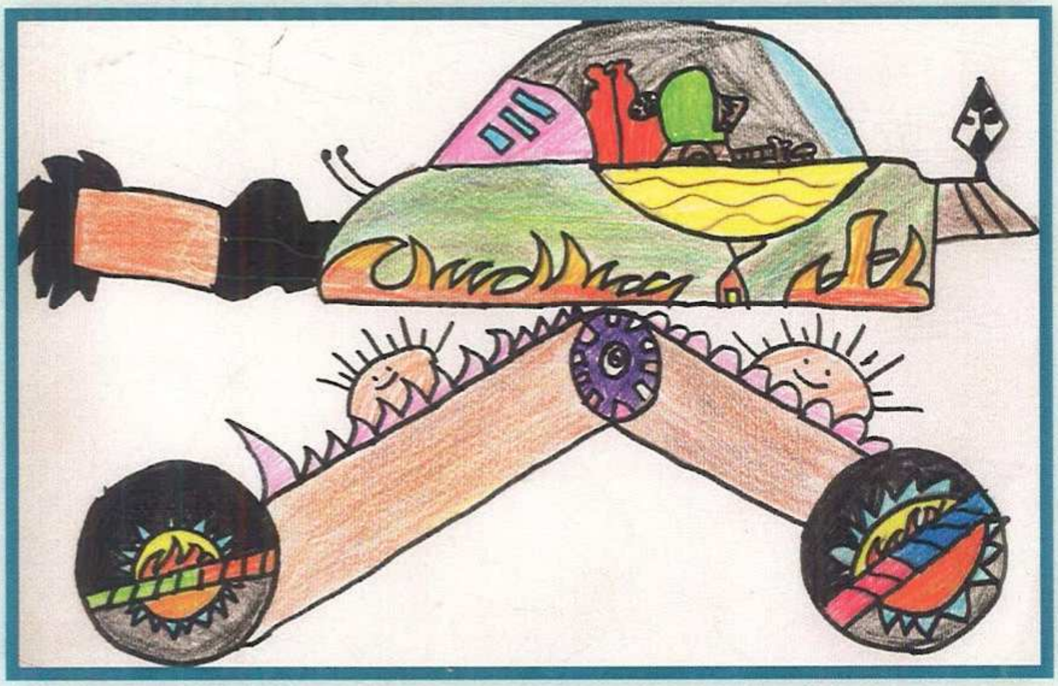

Arman Ahuja
STD II
s/o Anu Ahuja

Cheshta Ahuja
STD IX
d/o Anu Ahuja

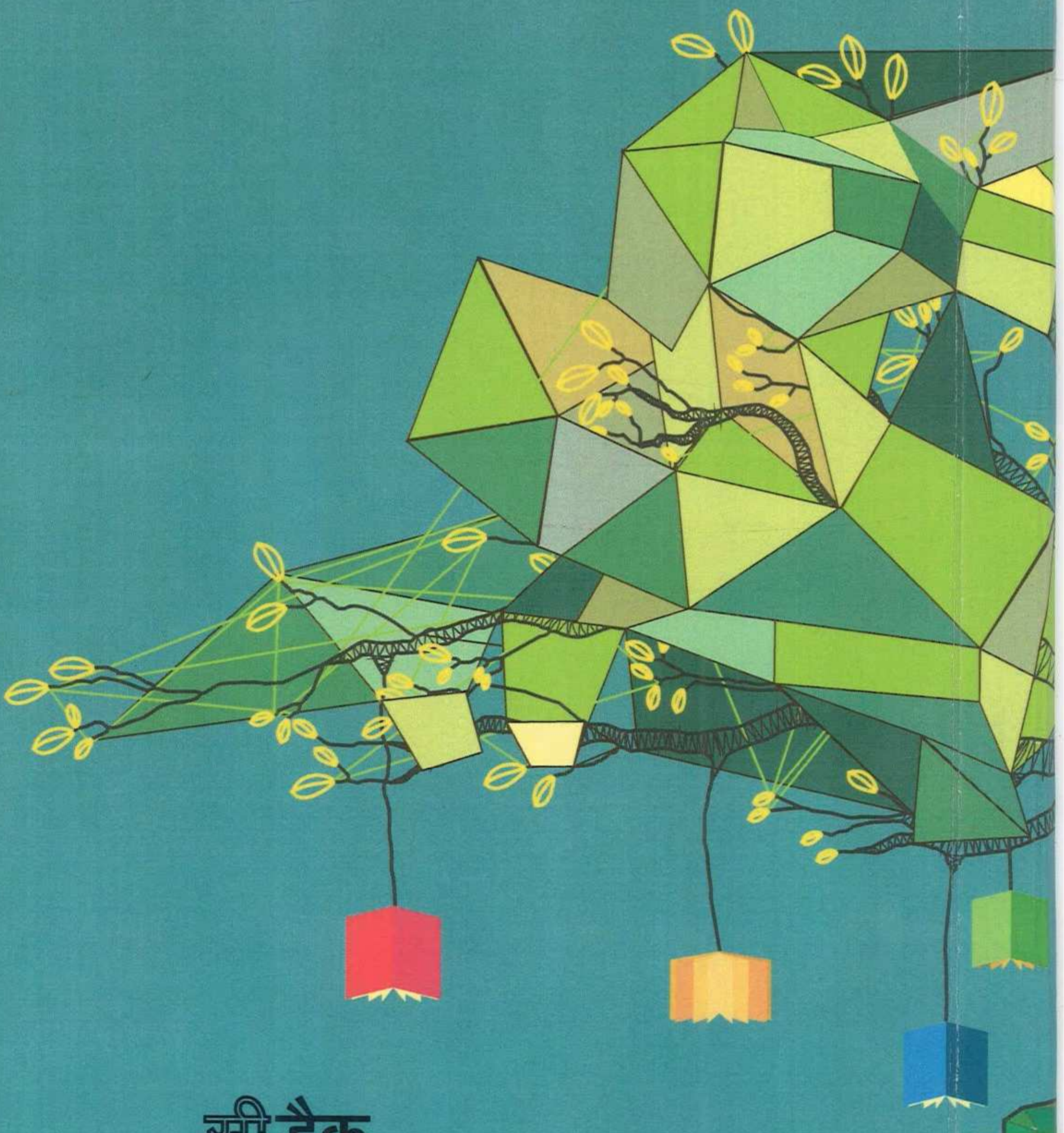

सी डैक
CDAC

प्रगत संगणन विकास केंद्र
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING

A Scientific Society of the Ministry of Communications and Information Technology, Government of India
A-34, Industrial Area, Phase-VIII, Mohali - 160071, (Near Chandigarh) Punjab. INDIA.
Phone: +91-172-2237052-57, +91-172-6619000 Fax: +91-172-2237050-51
Website: www.cdacmohali.in